



112113 - উপর্যুপরি কবরি গুনাত লপিত ব্যক্তরি মারা গলে তাदरे शषे परिणति

प्रश्न

आल्लाह ताआलार बाणी: “ब्यभचारिणी ओ ब्यभचारि— तादरे प्रतयकेके एकशत बतेराघात करबे”, एवं आल्लाह ताआलार बाणी: “आर यारा सचचरतिरा नारीर प्रतिअपवाद आरोप करे, तारपर तारा चरजन साक्षी नयिे ना आसते, तादरेके तेमेरा आशति बतेराघात कर।” एवं आल्लाह ताआलार बाणी: “आर पुरुष चरे ओ नारी चरे— तादरे उभयरे हात कटे देओ; तादरे कृतकरमेरे फल ओ आल्लाहर पक्ष थके देष्टान्तमूलक शास्ति हसिबे। आर आल्लाह पराकरमशाली, प्रज्जंमय।” एरा यारा ए धरणरे कबरी गुनाते लपित हय एवं तादरे उपर शरयि शास्ति कायमे करार मत कटे ना थके एवं तारा ताओवा ना करे मारा यय; ताहले कयिमतरे दिन तादरे हुकुम कहिबे?

प्रयि उत्तर

आलहामदु लल्लाह।

“आहले सुन्नाह ओयल जामाआतरे आकदि हलो: मुसलमानदरे मध्ये कटे यद ब्यभचारि, अपवाद-आरोप, चुरि हित्यादरि मत कबरी गुनाते उपर्युपरी लपित अवस्थाय मारा यय ताहले से ब्यक्ति आल्लाहर इच्छार अधीन थकबे। तनि चाहले ताके क्षमा करे दिने। आर तनि चाहले ताके उपर्युपरी लपित कबरी गुनाहटरि जन्य शास्ति दिने। तबे तार शषे परिणति हबे जान्नात। यहते आल्लाह ताआला बले: “नश्चय आल्लाह शरि करे गुनाह क्षमा करबने ना; एर चये लघु गुनाह तनि यार जन्य इच्छा क्षमा करबने।” [सूरा नसि, आयात: 8८]

एवं एइ मरमे सहि ओ मुताओयातरि हादसिगुलोरे कारणे; ये हादसिगुलो प्रमाण करे ये, गुनाहगार इमानदारदरेके जाहान्नाम थके बरे करा हबे। उवादा बनि सामते (राः) एर हादसिे एसछे: “आमरा नबी साल्लाल्लाहु आलाइहि ओया साल्लामरे काछे छलाम। तखन तनि बलले: तेमेरा कहि आमार हाते एइ मरमे बाइआत (अङ्गीकार) करबे ना ये, तेमेरा आल्लाहर साथे शरि करबे ना, ब्यभचारि करबे ना, चुरि करबे ना...?! तेमोदरे मध्ये ये ब्यक्ति अङ्गीकार पूर्ण करबे से आल्लाहर काछे एर प्रतिदिन पाबे। आर ये ब्यक्ति एर कनेटतिे लपित हबे एवं ताके एर दण्ड देओया हबे ताहले एइ दण्ड तार जन्य प्रतिकार हये याबे। आर ये ब्यक्ति एर कनेटतिे लपित हयछे; कनि तू आल्लाह तार बयिगटि गोपन रथेछे; तार सिद्धान्त आल्लाहर काछे। तनि चाहले ताके शास्ति दिते पारने एवं चाहले ताके क्षमा करे दिते पारने।”

आल्लाहइ उत्तम ताओफकिदाता, आमदरे नबी मुहाम्मदरे प्रति, तार परिवार-परजिन ओ साहाबीवरगरे प्रति आल्लाहर रहमत



ও শান্তি বর্ষতি হোক।[সমাপ্ত]

গবষণা ও ফতোয়া বিষয়ক স্থায়ী কমিটি।

শাইখ আব্দুল আযযি বনি বায, শাইখ আব্দুর রাজ্জাক আফফি, শাইখ আব্দুল্লাহ্ বনি গাদইয়ান, শাইখ আব্দুল্লাহ্ বনি কুয়ুদ।[ফাতাওয়াল লাজনাদ দায়মি (১/৭২৮)]